आदेश

कालबेल की घनघनाहट सुनकर चपरासी रहीस बांस के कक्ष में प्रवेश किया ।बांस ऐनक उपर नीचे करते हुए बोले क्यों विवेक आ गये ।

रहीस–नही सर वे ग्यारह बजे के बाद आते हैं ।

विवेक दफतर में घुसते ही रहीस को चाय लाने का आदेश दिये ।

रहीस–सरजी चाय से पहले साहब की सुन लो ।

विवेक–सर आपने बुलाया है ।

बांस–तुमको अपनी औकात मालूम है । कैसे नौकरी लगी है । तुम्हारी मां को तो मालूम होगा । कितने सफेदपोश,सफेदकालर की चौखटों पर माथा पटकी तब जाकर नौकरी लगी । और तुम राम जैसे नेक,ईमानदार,वफादार कर्मचारी को औकात दिखा रहे हो,बेवकूफ कह रहे हो । ये अफसरगीरी है या दादागरीर ?

विवेक–सारी सर.....

बांस–माफी राम से मांगो ।

राम–सर कब तक इस दादा किस्म के अफसर को माफी दूं । पहले भी कई बार दे चुका हूं ।

बांस–एक बार और.....

राम–सर आपका ओदश.....